प्रश्न:

''कलीसिया के अनन्त भविष्य के बारे में बाइबल ज़्या सिखाती है?''

उज़्र:

यह अंतिम प्रश्न उस प्रतिफल की ओर ध्यान दिलाता है जिसकी प्रतीक्षा हर विश्वासी व्यज़्ति करता है (प्रकाशितवाज़्य 2:10)। आशा है कि इस अध्ययन से हर पाठक में नये नियम की कलीसिया का विश्वासी सदस्य बनने की इच्छा जागी होगी।

यह विचार कितना रोमांचकारी है कि कलीसिया मसीह में परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य के अनुसार बनाई गई! कलीसिया में पाया जाने वाला परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान ''पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग'' है (इफिसियों 3:10, 11, 21)। जगत की नींव रखने से पहले, प्रेमी परमेश्वर के मन में, स्वर्ग में कलीसिया के अनन्त भविष्य की बात पहले से ही तय थी (1 पतरस 1:20)।

सचमुच, स्वर्गीय संसार के बारे में बाइबल के वर्णन पर मनन करने पर ''परमेश्वर के उज़्ाम वचन का और आने वाले युग की सामर्थों का स्वाद'' (इब्रानियों 6:5) मिल जाता है। बाइबल अनन्त भविष्य के बहुत से उदाहरणों का इस्तेमाल करते हुए, मसीही लोगों को एक उज़्ाम देश की प्रतीक्षा करने के लिए तैयार करती है।

जीवन के वृक्ष का फल खाने वाले

अदन की वाटिका में, ज्ञान के वृक्ष के अलावा, जीवन देने वाले सामर्थ का वृक्ष भी था, जिसे ''जीवन का वृक्ष'' कहा गया है। यह स्पष्ट और दिखाई देने वाला वृक्ष था। इसमें से ''हाथ बढ़ाकर ... तोड़ के खा'' (या) जा सकता था (उत्पज़ि 3:22)। आदम और हव्वा के अयोग्य सिद्ध होने पर परमेश्वर ने उन्हें उस बहुमूल्य वृक्ष से दूर करके उसकी सुरक्षा के लिए करूबों को नियुज़्त किया। बाग में ये करूब कितनी देर तक रहे और वे कहां गए, यह

कोई नहीं जानता है। उत्पत्ति की पुस्तक के बाद की चौंसठ किताबों में उस अद्भुत वृक्ष का कोई उल्लेख नहीं है। (स्पष्टतया नीतिवचन 11:30 इसका अपवाद नहीं है।) परन्तु परमेश्वर की अनन्त योजना के अनुसार उस वृक्ष को भुलाया नहीं गया था। इस वृक्ष का विचार प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में नये सिरे से दिया गया, अब यह दृश्यमान या दिखाई देने वाला, पृथ्वी पर होने वाला वृक्ष नहीं बल्कि स्वर्ग में एक आत्मिक दृष्टांत के रूप में था। हम इस बात से आनन्दित होते हैं कि अदन में दिखाया गया जीवन का वृक्ष अब स्वर्गीय वृक्ष के रूप में दिखाया जाता है (प्रकाशितवाक्य 2:7)।

आम लोगों को जीवन अच्छा लगता है और वे अच्छे दिन देखना चाहते हैं (1 पतरस 3:10)। मसीह भरपूरी का जीवन देने के लिए आया था (यूहन्ना 10:10)। वह मृत्यु का नाश करके सुसमाचार के द्वारा जीवन और अमरता को प्रकाश में लाया (2 तीमुथियुस 1:10)। केवल वही "मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर ... जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर के दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा" सकता था (इब्रानियों 2:14, 15)। केवल वही कह सकता है, "कि मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवन हूं। मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं" (प्रकाशितवाक्य 1:17, 18)।

फिर, इसका अर्थ यह हुआ कि जो कुछ यीशु ने किया है उसके आधार पर, कलीसिया के विश्वासी सदस्यों को उस जगह रहने का सौभाग्य मिलेगा जहां सांकेतिक रूप में जीवन का वृक्ष लगाया गया है। वहां कोई करूब उन्हें इसके फल खाने से मना नहीं करेगा; परन्तु फिर भी कलीसिया के हर सदस्य को वहां से खाना नहीं मिलेगा। केवल "उस आयु को प्राप्त करने के योग्य समझे जाने वाले और मुर्दों में से जी उठने वालों" को ही यह सौभाग्य प्राप्त होगा। स्वर्गीय वृक्ष से खाने वाले फिर कभी नहीं मरेंगे, "क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे, और जी उठने के संतान होने से परमेश्वर के भी संतान होंगे" (लूका 20:35, 36)।

जीवन के वृक्ष की मूल जगह "अदन" नामक एक बाग में थी, जिसका अर्थ "आनन्द" है। दूसरा वृक्ष "स्वर्गलोक" नामक स्थान में है जिसका अर्थ है "एक पार्क या सुरक्षित और आनन्द की जगह।"[1] स्वर्ग की तस्वीर एक पार्क या वाटिका के रूप में दिखाई गई है जो "बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी ... जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती" है (प्रकाशितवाक्य 22:1)। उस नदी के दोनों ओर "जीवन का पेड़" है "उसमें बारह प्रकार के फल लगते" हैं, "और वह हर महीने फलता" है "और उस पेड़ के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते" हैं (प्रकाशितवाक्य 22:2)।

जीवन का मुकुट पहनना

कलीसिया के विश्वासी सदस्यों का अनन्त भविष्य मुकुट पहनने के दूसरे रूपक में दिखाया जाता है (प्रकाशितवाक्य 2:10)। प्रतिज्ञा किया हुआ मुकुट *diadema* अर्थात राजमुकुट नहीं है जिसे एक राजा द्वारा अपने पुत्र को आगे सौंप दिया जाता है। अलंकार की

भाषा में यह एक *stephanos* है जो प्राचीन काल की खेलों में विजय की माला या हार, अर्थात बैज होता है। फूलों से बना ओलज़्पिक मुकुट मुरझा जाता था, परन्तु मसीही मुकुट सदा तक रहता है (1 कुरिन्थियों 9:25)। ओलज़्पिक मुकुट तो सूख जाता है, परन्तु मसीही व्यज़्ति को महिमा का वह ताज मिलता है जो कभी नहीं मुरझाता (1 पतरस 5:4)। पौलुस इस बात से आनन्दित था कि स्वर्गीय राज्य में धर्म का मुकुट उसकी प्रतीक्षा कर रहा है (2 तीमुथियुस 4:8)।

मन्ना खाना

हमेशा तक रहने वाले जीवन की तीसरी तस्वीर इब्रानी लोगों के जंगल में घूमने की है। ये लोग भूख से मर गए होते यदि परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म से उन्हें भोजन उपलज़्ध न करवाया होता। जब रात को उनके डेरे पर ओस गिरती थी, तो उसके साथ कुछ और भी गिरता था जिसे ''मन्ना'' कहा जाता था (गिनती 11:9)। इसका स्वाद शहद से बने पूए जैसा होता था (निर्गमन 16:31)। परमेश्वर ने इन लोगों को इस भोजन से जंगल में चालीस वर्षों तक ज़िन्दा रखा। स्वर्ग से उतरा यह भोजन मिला, जिसे सप्तति अनुवाद में *arton angelon* अर्थात ''स्वर्गदूतों का भोजन'' (भजन संहिता 78:25) कहा गया है। KJV में इसे ''स्वर्गदूतों का खाना'' कहा गया है। इसका अर्थ शायद यह है कि परमेश्वर ने वह भोजन अपने स्वर्गदूतों के द्वारा उपलज़्ध करवाया था। इब्रानी लोगों को मृत्यु से बचने के लिए दिए गए सांसारिक मन्ना की तरह स्वर्ग में आत्मिक ''मन्ना'' जाता है जिससे छुटकारा पाए हुए लोग जीवित रह सकते हैं (प्रकाशितवाज़्य 2:17)।

उकेरा हुआ सफेद पत्थर दिया जाना

यीशु की अनन्त आशीष की चौथी तस्वीर प्रत्येक विश्वासी मसीही को श्वेत पत्थर दिया जाना है (प्रकाशितवाज़्य 2:17)। रोमी मुकदमों में, न्याय में दोषी बताने के लिए काले पत्थर का और दोषमुज़्त बताने के लिए सफेद पत्थर का इस्तेमाल किया जाता था। स्वर्ग में, आत्मा के अनुसार जीने वालों के लिए यही बात सत्य है, ''अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं'' (रोमियों 8:1)। दोषमुज़्त होने का सफेद पत्थर निजी तौर पर उद्धार को भी दिखाता है अर्थात सफेद पत्थर पूरी कलीसिया को नहीं बल्कि हर विश्वासी मसीही को मिलता है।

इसके अलावा, ज़्योंकि इस पर केवल इसे पाने वाले व्यज़्ति का नाम ही लिखा गया है इसलिए लगता है कि यह पत्थर प्रभु की ओर से व्यज़्ति के निजी परिचय और उसे दिए जाने वाले प्रतिफल की जानकारी देता है। स्वर्ग में जाना सचमुच अद्‌भुत होगा (जिसे काले पत्थर के बजाय श्वेत पत्थर पाने से दिखाया गया है), परन्तु स्पष्ट तौर पर, प्रभु हर पत्थर पर अलग-अलग व्यज़्तियों का नाम लिखकर उस उज़्तम देश में आनन्द देगा। इसलिए मसीही लोगों को आंशिक या साधारण प्रतिफल के लिए नहीं बल्कि ''पूरा प्रतिफल'' पाने के लिए उत्साहित किया जाता है (2 यूहन्ना 8)। मसीही बनने वाला हर व्यज़्ति जो विश्वासी रहता

है और स्वर्ग में जाता है अपने आप में ही आत्मा जीतने के लिए प्रतिफल है (देखिए 1 कुरिन्थियों 3:14)। वह प्रभु के आने पर उस आत्मा बचाने वाले के लिए ''महिमा का मुकुट'' बनाता है। पौलुस ने थिस्सलुनीके के मसीही लोगों के नाम पत्र में लिखा, ''भला हमारी आशा, या आनन्द या बड़ाई का मुकुट ज़्या है? ज़्या हमारे प्रभु यीशु के सज़्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे? हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:19, 20)।

श्वेत वस्त्र पहनना

मसीही लोगों को निष्कलंक जीवन बिताने में अगुआई की प्रेरणा देने के लिए पांचवीं तस्वीर स्वर्ग में मिलने वाले अर्थात श्वेत वस्त्र हैं (प्रकाशितवाज़्य 3:5)। तुलना करने पर, यह हमें परमेश्वर की आज्ञा का स्मरण दिलाता है कि भद्दे व्यज़्ति का कुछ किया जाना आवश्यक है: ''इसके ये मैले वस्त्र उतारो'' (जकर्याह 3:4)। मसीही लोग अपने आप को ''शरीर और आत्मा की सब प्रकार की मलिनता से शुद्ध'' करके ''परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध'' करके (2 कुरिन्थियों 7:1), अपने आप को स्वर्ग से मिलने वाले वस्त्र पहनाने के लिए तैयार कर रहे होते हैं। प्रभु उन्हें अपना बनाने में शर्म नहीं करेगा; उसने पहले ही यह घोषणा कर दी है कि ''वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए मेरे साथ घूमेंगे ज़्योंकि वे इस योग्य हैं'' (प्रकाशितवाज़्य 3:4)।

''योग्य'' शज़्द को इसके अर्थ के अनुसार ही समझा जाना चाहिए। पूर्ण तौर पर, ''हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं'' (यशायाह 64:6)। पौलुस ने लिखा, ''उस ने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, ... हुआ'' (तीतुस 3:5)। यदि हम हर आज्ञा को पूरा कर भी दें तो भी अपना कर्ज़व्य पूरा करने के लिए हम केवल अयोग्य दास ही हैं (लूका 17:10)। हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है, परन्तु ''यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा'' (रोमियों 11:6)। अपने कर्मों से उद्धार कमाने का घमण्ड कोई नहीं कर सकता (इफिसियों 2:8, 9); परन्तु यदि हम प्रभु की आज्ञाओं का पालन नहीं करते (मज़्ती 7:21), तो हमें परमेश्वर के नगर में उसके द्वारों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी (देखिए इब्रानियों 5:9; प्रकाशितवाज़्य 22:14)। निकज़्मे होने के बावजूद, प्रभु हमें अपने लहू के चश्मे में धोकर धार्मिक बनाने को तैयार है (जकर्याह 13:1; 1 कुरिन्थियों 6:11; प्रकाशितवाज़्य 1:5)।

अधिकार होना

सदा तक रहने वाली प्रसन्नता की स्थिति होने का एक और भाग विजय पाने वालों को दिया गया अधिकार है। भजन संहिता का दूसरा अध्याय लोहे के डंडे से सब देशों पर यीशु के शासन की घोषणा करता है (स्पष्टतया जिस समय वह धधकती हुई आग में अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ आएगा; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9)। यीशु ने अपने विषय में

दाऊद की बात को याद किया और उसमें सब देशों पर अपनी हुकूमत में चेलों के सहभागी होने को शामिल किया (प्रकाशितवाक्य 2:27)। संसार के राज्यों पर विजय पा लेने के बाद मसीही लोग प्रभु की ओर होंगे (प्रकाशितवाक्य 11:15)।

एक अर्थ में मसीही लोग मसीह के साथ इस जीवन में पहले से ही राज्य कर रहे हैं। जब वे अपने शरीरों में पाप की शक्ति का इन्कार करके इस पर विजय पा लेते हैं तो वे राज्य कर रहे होते हैं (रोमियों 6:12)। अब वे राजा (या "एक राज्य") तथा याजक हैं (कुलुस्सियों 1:13; प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10)। KJV और NASB में प्रकाशितवाक्य 5:10 में गलत लिखा गया है कि मसीही लोग पृथ्वी पर राज्य करेंगे। पृथ्वी पर तो वे अभी राज्य कर रहे हैं, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 5:10 ASV के अनुवाद में है ("... they reign upon the earth")। क्योंकि प्रभु के आने के समय तो पृथ्वी जल जाएगी, इसलिए कोई पृथ्वी रहेगी ही नहीं जिस पर कोई राज्य कर सके (2 पतरस 3:10–12)।

प्रभु के प्रकट होने के उस दिन, मसीही लोग उसके साथ उसके सिंहासन पर रहकर राज्य करेंगे (2 तीमुथियुस 2:11; प्रकाशितवाक्य 3:21), जैसे पिन्तेकुस्त के दिन स्वर्गारोहण के बाद वह विजय पाकर पिता के सिंहासन पर बैठा था। उसने पिता के सिंहासन को अपना सिंहासन बना लिया (देखिए लूका 22:29; कुलुस्सियों 1:13) ।[2] न्याय के बाद वह अधिकार अपने पिता को लौटा देगा और स्वयं उसके अधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके अधीन किया है (1 कुरिन्थियों 15:28)।

एक और अर्थ में, न्याय के बाद मसीह अपने पिता के अधीन और उसके साथ सदा के लिए राज्य करता रहेगा (इब्रानियों 1:8)। परमेश्वर का सिंहासन यीशु का सिंहासन ही होगा (प्रकाशितवाक्य 22:1)। इस अर्थ में मसीही लोग भी मसीह के साथ सदा तक राज्य करते रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 22:5)।

जीवन की पुस्तक में नाम लिखवाना

एक अन्तिम आश्वासन कि परमेश्वर के लोगों को अनन्त आशीष मिलेगी वह यह है कि उसके सामने यादगारी की पुस्तक में उनका नाम लिखा होना (मलाकी 3:16)। वास्तव में, परमेश्वर कभी भी कुछ नहीं भूल सकता; परन्तु उसने हमें यह प्रतिज्ञा मानवीय कल्पना में (अर्थात, मनुष्य के स्वभाव के अनुसार परिस्थिति का वर्णन करते हुए) दी है। उसने अपने आप को ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जो उन लोगों के नाम एक पुस्तक में लिखता है जो उसे पसन्द है।

एक दृष्टिकोण से, नाम संसार की नींव रखने के समय से ही जीवन की पुस्तक में अंकित हैं (प्रकाशितवाक्य 17:8)। परन्तु उनका नाम लिखा जाना उनकी इच्छा से नहीं है, क्योंकि परमेश्वर के पूर्व ज्ञान में, उसकी पुस्तक में उनका नाम लिखा जाना उनके विश्वास और कामों से तय होता है (प्रकाशितवाक्य 17:14; 22:12)। जिनके नाम उस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं वे अपवित्र, घृणित और झूठे हैं (प्रकाशितवाक्य 21:27)। हमें चेतावनी दी गई है कि लिखे गए वे नाम काटे भी जा सकते हैं (निर्गमन 32:33; प्रकाशितवाक्य 3:5)।

यीशु ने अपने चेलों को यह सिखाकर प्रोत्साहित किया कि आश्चर्यकर्म की शक्तियों से भी महत्वपूर्ण किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा होना है (लूका 10:20)। पौलुस को यह अच्छा लगा कि उसके कुछ सहकर्मियों के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं (फिलिप्पियों 4:3)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि कलीसिया के लोगों अर्थात पहलौठों का नाम स्वर्ग में लिखा हुआ है (इब्रानियों 12:23)।

मसीह की मंगेतर बनना

विवाह की तरह बाइबल मसीह का अपने लोगों से घनिष्ठ सम्बन्ध बताती है। जब एक दूषित पापी सुसमाचार की आज्ञा का पालन करता है तो वह तुरन्त वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध होकर, मसीह की दुल्हन का एक भाग बन जाता है (इफिसियों 5:26)। पवित्र और शुद्ध होने पर मसीही व्यक्ति का विवाह उससे हो जाता है जो मुर्दों में से जी उठा था (रोमियों 7:4)। इस प्रकार वह उस पवित्र पत्नी (अर्थात मसीह की कलीसिया) का भाग बन जाता है, जिसमें कोई "कलंक, झुर्री या कोई और ऐसी वस्तु" नहीं है (इफिसियों 5:27)। मानवीय विवाह के आनन्द का इस्तेमाल मसीह के साथ एक होने के एक पापी के आनन्द के साथ तुलना करके दिखाया जाता है।

मसीही लोगों का मसीह के साथ विवाह होने का दृष्टांत बदल जाता है जब कोई संसार की ओर आने के बारे में सोचता है। उस परिप्रेक्ष्य से, मसीही व्यक्ति मसीह के साथ विवाहित नहीं रहता, बल्कि विवाह करने के लिए उसकी मंगनी हुई होती है, जबकि विवाह अगले जीवन में होना होता है। कुरिन्थी लोगों के मसीह की कलीसिया के सदस्य बनने पर (सुनकर, विश्वास करके और बपतिस्मा लेकर; प्रेरितों 18:8; 1 कुरिन्थियों 1:1, 2) वे यीशु की मंगेतर बन जाते हैं। उनकी शादी करवाने वाला पौलुस था, जिसने कहा, "क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं" (2 कुरिन्थियों 11:2)। विवाह का दिन जगत के अन्त का समय होगा, जब "मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा: और उसकी पत्नी ने अपने आपको तैयार कर लिया है" (प्रकाशितवाक्य 19:7)। कुरिन्थुस के लोगों के लिए देह और आत्मा को सब प्रकार की अशुद्धताओं से दूर रखना था ताकि वे परमेश्वर के भय में पवित्रता का जीवन बिता सकें (2 कुरिन्थियों 7:1)। उनके लिए दुल्हन के लिबास में सजना आवश्यक था "शुद्ध और चमकदार महीन रेशम" से "क्योंकि उस महीन रेशम का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है" (प्रकाशितवाक्य 19:8)। इन लक्ष्यों को पूरा करने की कोशिश में, वे दूल्हे के आने की तैयारी में अपना ध्यान लगाते हैं। वह दिन सब दिनों से बड़ा होगा! यूहन्ना ने लिखा है, "धन्य वे हैं, जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं" (प्रकाशितवाक्य 19:9)।

विवाह के उस आनन्ददायक भोज से भी बढ़कर अर्थात विवाह की दावत में अतिथि बनने से भी बढ़कर उसका अर्थ है, क्योंकि मसीही व्यक्ति अपने आप को उस दिन मसीह की दुल्हन बनने के रूप में देखता है। जिस कारण, इस बात से उसके मन में उस स्त्री की

तरह लड्डू फूटते जिसने अपने आप को विवाह के दिन के लिए निष्कलंक रखा है।

सारांश

यदि आप प्रभु की कलीसिया के सदस्य नहीं हैं, तो हमारा आपसे आग्रह है कि अभी इसके सदस्य बन जाएं। यदि आप अविश्वासी सदस्य हैं, तो हम आपसे अपने पहले वाले प्रेम की ओर लौटने का आग्रह करते हैं (प्रकाशितवाक्य 2:4, 5)। हमारी प्रार्थना यही है कि इस पाठ का अध्ययन करने वाले सब लोग एक दिन "प्रभु के विवाह के भोज" में उपस्थित हों!

पाद टिप्पणियां

[1]पवित्र शास्त्र में "स्वर्ग लोक" शब्द का एक और अर्थ है (लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 12:4), परन्तु इस पाठ में इस दूसरे अर्थ को शामिल नहीं किया गया। [2]हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले प्रकाशितवाक्य 3:21 का यह बताने के लिए गलत इस्तेमाल करते हैं कि यीशु अब अपने नहीं बल्कि अपने पिता के सिंहासन पर है। दो सिंहासन कदापि नहीं हैं क्योंकि दो बराबर के अधिकार नहीं हो सकते। तुलना के लिए, दाऊद का सिंहासन (1 राजा 1:35) प्रभु का ही था (1 इतिहास 29:23); इसलिए सिंहासन दो नहीं थे।

दोहरी नागरिकता

पौलुस का जन्म रोम में या किसी रोमी कॉलोनी में न होने के बावजूद, वह एक रोमी नागरिक था। उसे यह नागरिकता विरासत में मिली थी; क्योंकि उसके पिता के पास यह नागरिकता थी इसलिए पौलुस कह सकता था, "मैं तो जन्म से रोमी हूं" (प्रेरितों 22:28ख)। पौलुस को रोमी नागरिकता के बहुत से लाभ मिले (देखिए प्रेरितों 16:37; 22:25–28; 23:12–27; 25:11, 12); परन्तु सबसे अधिक महत्व स्वर्ग की नागरिकता का था (फिलिप्पियों 3:20)। अपने पापों "को धो डालने" के लिए बपतिस्मा लेने के समय से ही (प्रेरितों 22:16), उसे दोहरी नागरिकता का आनन्द मिल रहा था, एक तो रोम की नागरिकता और दूसरी स्वर्गीय देश की (इफिसियों 2:19)।

सुसमाचार को सुनने और उसकी आज्ञा मानने पर, लुदिया और उसका घराना (प्रेरितों 16:14, 15), स्वर्ग में "साथी नागरिक" बन गए। यही बात फिलिप्पी दारोगे (प्रेरितों 16:25–33) और उसके घराने के लिए सही थी। आज सारे संसार में हज़ारों लोग विश्वास करके, मन फिराकर और बपतिस्मा लेने के बाद (मत्ती 28:18–20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47), अब दोहरी नागरिकता का आनन्द लेते हैं। वे किसी सांसारिक निवास की ओर नहीं बल्कि "उस स्थिर नेंव वाले नगर की बाट" जोहते हैं, "जिसका रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है" (इब्रानियों 11:10), अर्थात स्वतन्त्र, स्वर्गीय यरूशलेम की ओर जो ऊपर है (गलातियों 4:26; इब्रानियों 12:22)। हमारा यहां कोई स्थिर रहने वाला नगर नहीं है, परन्तु इनके साथ "हम एक आने वाले नगर की खोज में हैं" (इब्रानियों 13:14ख)।